I

Q:- 'नारिकेल फल सम्मितं वचो भारवेः' इस उक्ति की समीक्षा करें।

Ans: अर्थगौरव (भारवेरर्थगौरवम्) के कारण आलोचकों ने भारवि के काव्यों को यद्यपि अत्यधिक प्रशंसा का पात्र बना दिया है तथापि इस बात की उपेक्षा नहीं की जा सकती कि उनके काव्य में गुण के साथ कुछ दोष भी अवश्य पाये जाते हैं। अर्थ की जिस गंभीरता से उनकी भक्ति का परिचय मिलता है, वही अर्थगांभीर्य उनमें हृदय पक्ष की दुर्बलता की ओर भी संकेत करता है। भारवि ने स्थल-स्थल पर अपनी अनावश्यक अलंकारप्रियता का प्रदर्शन किया है, जिसके परिणामस्वरूप उनका भावपक्ष, कलापक्ष की अपेक्षा अत्यन्त शिथिल हुआ-सा-प्रतीत होता है। किरातार्जुनीय के पाँचवें सर्ग का यमक-प्रयोग तथा पन्द्रहवें सर्ग के सर्वतोभद्र आदि चित्रकाव्य तथा श्लेषात्मक एकाक्षर एवं द्व्यक्षर आदि श्लोक अतीव सौन्दर्यपूर्ण होते हुए भी अत्यन्त क्लिष्ट हो गए हैं। उनसे अर्थ निष्पन्न करने में परिणत बुद्धिसम्पन्न व्यक्ति को भी अत्यधिक माथापच्ची करनी पड़ती है। यही कारण है कि मल्लिनाथ ने भारवि की उक्ति में क्लिष्टता एवं दुरूहता का आरोप करते हुए काव्य रसिकों के समक्ष निम्नलिखित घोषणा की है:—

नारिकेल फल सम्मितं वचो भारवेः सपदि तद् विभज्यते।
स्वादयन्तु रसगर्भ निर्भरं सारमस्य रसिका यथेप्सितम्॥

तात्पर्य यह है कि भारवि का काव्य (वाणी) नारिकेल फल के सदृश कठिन है। जिसको मैं अभी तोड़ रहा हूँ। अर्थात जिसको व्याख्यायित कर रहा हूँ। आपलोग इस काव्य के रसपूर्ण सार भाग को यथेष्ट आस्वादन करें।

कहने का सारांश यह है कि भारवि की उक्ति नारिकेल फल के समान भीतर से रसपूर्ण होते हुए भी बाहर से रूक्ष एवं विषम है। जिस प्रकार नारिकेल फल को तोड़कर उससे रस निकालने में अत्यन्त परिश्रम की आवश्यकता पड़ती है, उसी प्रकार भारवि के काव्य को तोड़-मोड़कर वास्तविक अर्थ निकालने में विद्वानों को बुद्धि का व्यायाम करना पड़ता है वैसे तो भारवि की शाब्दी-क्रीड़ा का चमत्कार अधिकाधिक स्थलों पर दृष्टिगत होता है तथापि किरात का पाँचवा तथा पन्द्रहवाँ सर्ग इसके लिए बहुत प्रसिद्ध है। अतः इस प्रसंग में उन्हीं सर्गों से स्थालीपुलाक-न्यायवत् एक दो उदाहरणों को उद्धृत करना न्यायसंगत प्रतीत होता है:—

पृथुकदम्बकदम्बकराजितं ग्रथितमालतमालवनाकुलम्।
लघुतुषारतुषारजलच्युतं धृतसदानसदाननदन्तिनम्॥

अर्थात् यह हिमालय बड़े-बड़े कदम्ब के पुष्पों से शोभित तथा गूँथे हुए पुष्पमाल्य के सदृश तमाल के वनों से व्याप्त हो रहा है। बिन्दु-बिन्दु करके हिमजल इसके ऊपर से चू रहा है इसपर मदस्रावी एवं सुन्दर शुण्ड-मुशुण्ड वाले हाथी विचरण कर रहे हैं। यहाँ प्रत्येक चरण में यमक की रमणीय शोभा दर्शनीय है। भारवि ने एक ऐसा भी पद्य लिखा है जिसमें केवल एक ही अक्षर पाया जाता है। अर्जुन के बाणों से भयभीत होकर भागते हुए प्रथम गणों से कार्तिकेय जी कहते हैं:—

न नोननुन्नो नुन्नोनो नाना नानानना ननु।
नुन्नोऽनुन्नो ननुन्नेनो नानेनानुन्ननुन्ननुत्॥

अर्थात् निकृष्ट पुरुष के द्वारा आहत जो पुरुष है, वह वस्तुतः पुरुष नहीं है जिस पुरुष का स्वामी

II

आहत न हो, वह पुरुष आहत होकर भी शास्त्र की दृष्टि से वास्तव में आहत नहीं कहा जा सकता। अत्यन्त आहत अर्थात चपल पुरुष को भी आहत करने वाला अपराधी होता है। लेकिन यह पुरुष वैसा अपराधी भी नहीं होता है। यद्यपि भारवि का प्रस्तुत एकाक्षर पद्य अपूर्व भाव से भरा हुआ है तथापि इस प्रकार के चित्र-काव्य के प्रयोग से इनका काव्य अत्यन्त कठिन हो गया है। इस तरह के श्लोक के पढ़ते समय ही साधारण पाठक शब्दवैचित्र्य के चकाचौंध में पड़ जाता है तथा इससे अर्थ निकालने में उसे पूर्णरूपेण बुद्धि का व्यायाम करना पड़ता है।

निष्कर्ष यह है कि भारवि की कविता में मल्लिनाथ ने क्लिष्टता का जो आरोप किया है उसमें आंशिक सत्यता अवश्य है। लेकिन फिर भी इनके काव्य में एक विचित्र चमत्कार एवं मनोरम गाम्भीर्य है, जो पाठकों के हृदय को बलात् अपनी ओर आकृष्ट कर लेती है।

इस सम्बन्ध में यह भी ज्ञातव्य है कि कालिदास की रसशैली को पसंद करने वाले विद्वानों की दृष्टि में भारवि के उक्त प्रकार के काव्य का उतना महत्व भले ही न हो किन्तु संस्कृत महाकाव्य के क्षेत्र में भारवि ने जिस अलंकृत शैली का प्रवर्तन किया है, उस शैली के समर्थक विद्वानों के लिए भारवि का कठिन काव्य भी अपनी निजी विशिष्टता रखता है।